License Information

Study Notes - Book Intros (Tyndale) (Hindi) is based on: Tyndale Open Study Notes, Tyndale House Publishers, 2019, which is licensed under a CC BY-SA 4.0 license.

This PDF version is provided under the same license.

Study Notes - Book Intros (Tyndale)

फिलेमोन

यह संक्षिप्त पत्री, जो पौलुस के पत्रों में सबसे छोटी और व्यक्तिगत है, दिखाती है कि मसीह के द्वारा मनोभाव और सम्बंध कैसे परिवर्तित हो जाते हैं। यह उनेसिमुस, एक भगोड़े दास, के पक्ष में लिखा गया था, जो अपने स्वामी फिलेमोन के पास लौट रहा था। पौलुस ने फिलेमोन को प्रोत्साहित किया कि वह पारम्परिक स्वामी-दास सम्बंध से आगे बढ़कर उनेसिमुस को मसीह में प्रिय भाई के रूप में स्वीकार करे। इन मेल-मिलाप के वचनों के द्वारा, पौलुस हमें स्मरण कराते हैं कि मसीह के प्रेम के द्वारा मसीहियों के आपसी सम्बंध, चाहे व्यक्ति की सामाजिक स्थिति जो भी हो, पूर्ण रूप से बदल जाते हैं।

सन्दर्भ

उनेसिमुस नामक एक दास सम्भवतः अपने मसीही स्वामी, फिलेमोन, से भाग गया था। फिलेमोन कुलुस्से में रहते थे, जो रोमी प्रान्त आसिया (अब पश्चिमी तुर्की) का एक छोटा नगर था और इफिसुस से लगभग 120 मील (193 किमी) पूर्व में स्थित था। जब उनेसिमुस भागा, तो सम्भव है कि उसने अपने स्वामी की कुछ वस्तुएँ चुरा ली हों। किसी प्रकार वह पौलुस के सम्पर्क में आया, जो उस समय बन्दीगृह में थे, और पौलुस की सेवकाई के द्वारा वह विश्वासी बन गया। जब पौलुस को पता चला कि उनेसिमुस एक भगोड़ा दास है, तो उन्होंने उसे प्रोत्साहित किया कि वह अपने स्वामी के पास लौट जाए।

रोमी संसार में दासत्व व्यापक रूप से प्रचलित था, और रोमी व्यवस्था के अनुसार, पकड़े गए भगोड़े दासों को उनके स्वामियों के पास लौटाया जाना आवश्यक था। ऐसे दासों को प्रायः कठोर दण्ड दिया जाता था, जैसे कोड़े लगाना, दाग देना, या मृत्यु दण्ड देना, ताकि अन्य दासों के लिये यह एक चेतावनी बने। किन्तु फिलेमोन एक सम्माननीय मसीही अगुआ और एक अनुग्रहकारी, प्रेमपूर्ण व्यक्ति था। पौलुस ने यह पत्री बन्दीगृह से फिलेमोन को लिखी और इसे उनेसिमुस के साथ भेजा, ताकि भगोड़ा दास, जो सम्भवतः अपने स्वामी के पास भय सहित लौट रहा था, उसे एक आत्मीय मसीही स्वागत प्राप्त हो। यह पत्री एक सिफारिशी पत्री के समान प्रतीत होती है और पौलुस की प्रेरिताई अधिकार की पूर्ण पुष्टि के साथ लिखा गया है।

हम नहीं जानते कि जब उनेसिमुस वापस लौटा तो क्या हुआ। हालाँकि, लगभग पचास या साठ वर्ष बाद, मसीही शहीद इग्नेशियस द्वारा इफिसुस के मसीहियों को लिखे गए एक पत्री में उनेसिमुस नाम फिर से प्रगट होता है, इस बार आसिया प्रान्त के एक प्रतिष्ठित बिशप के रूप में। यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता कि वह वही व्यक्ति था, लेकिन यह सम्भव है कि पौलुस के साथ उसके घनिष्ठ सम्बंध के कारण वह युवा दास कलीसिया में प्रमुख स्थान पर पहुँचा और अन्ततः पूरे प्रान्त का बिशप बन गया। पौलुस की यह पत्री हमें स्मरण कराती है कि यीशु मसीह की कलीसिया में पारम्परिक वर्ग भेदों का कोई महत्व नहीं है।

सारांश

पौलुस फिलेमोन को प्रोत्साहित करते हैं कि वह उनेसिमुस को अब केवल एक दास के रूप में नहीं, बल्कि मसीह में एक सच्चे भाई के रूप में व्यवहार करें। अपनी पारम्परिक शुरुआत अभिवादन शैली (1:1–3) का उपयोग करते हुए, पौलुस स्वयं का परिचय देते हैं, फिलेमोन, और उनके परिवार और उनके घर में एकत्रित होने वाली कलीसिया का अभिवादन करते हैं, तथा उन पर अनुग्रह और शान्ति की प्रार्थना करते हैं। फिर पौलुस फिलेमोन के लिये परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं, विशेषकर प्रभु यीशु में उनका विश्वास और परमेश्वर के अनेकों लोगों के प्रति प्रकट किए गए उनके प्रेम के लिये (1:4–7)।

पौलुस फिर उनेसिमुस के लिये विनती करते हैं (1:8–22)। यद्यपि वह पहले एक भगोड़ा था, अब वह मसीह में एक विश्वासी हो चुका है और उसने स्वयं को एक बदला हुआ व्यक्ति सिद्ध किया है। पौलुस फिलेमोन से विनती करते हैं कि वह अपने दास पर अनुग्रह और क्षमा के साथ स्वीकार करे। पौलुस की वास्तविक इच्छा यह है कि उनेसिमुस उनके साथ रहे और बन्दीगृह में उनकी सेवकाई में सहायता करे। यद्यपि उनके पास प्रेरिताई अधिकार है कि वह फिलेमोन को आज्ञा दें कि वह उनेसिमुस को इस काम के लिये मुक्त करे, फिर भी वे इस अधिकार का उपयोग नहीं करते, क्योंकि वे चाहते हैं कि यह करुणा स्वेच्छा से फिलेमोन के हृदय से निकले, न कि किसी दबाव में। किन्तु पौलुस स्पष्ट रूप से संकेत देते हैं कि फिलेमोन को सुसमाचार के काम के लिये अपने दास को स्वतंत्र करने पर विचार करना चाहिए।

पत्री अपनी परम्परागत रीति से समाप्त होती है (1:23–25)। पौलुस विभिन्न मसीही विश्वासियों की ओर से फिलेमोन को नमस्कार भेजते हैं, और फिर उनके तथा उनके घर के सभी लोगों पर मसीह के अनुग्रह की प्रार्थना करते हैं।

लेखन की आवश्यकता

यद्यपि पारम्परिक व्याख्या यह है कि उनेसिमुस एक भगोड़ा दास था, अन्य सम्भावनाएँ भी प्रस्तुत की गई हैं। उदाहरण के लिये, हो सकता है कि उनेसिमुस को पौलुस के पास दूत के रूप में भेजा गया हो, या वह स्वयं किसी समस्या के समाधान के लिये पौलुस के पास गया हो, जो उसके और उसके स्वामी के बीच उत्पन्न हुई थी। वास्तव में, हम नहीं जानते कि वह अपने स्वामी के घर से क्यों गया था, किन्तु पारम्परिक व्याख्या इस पत्री के सन्दर्भ में उपयुक्त प्रतीत होती है।

लेखन की तिथि और स्थान

पारम्परिक रूप से यह माना जाता है कि पौलुस ने बन्दीगृह से लिखे गए पत्री (इफिसियों, फिलिप्पियों, कुलुस्सियों और फिलेमोन) तब लिखे जब वह रोम में कैद में थे (60–62 ईस्वी या लगभग 64–65 ईस्वी)। यह भी सम्भव है कि ये पत्री किसी पूर्व कैद के दौरान इफिसुस से लिखे गए हों। देखें इफिसियों की पुस्तक का परिचय, “लेखन की तिथि और स्थान।”

अर्थ और सन्देश

यह पत्री इस बात का जीवंत उदाहरण है कि मसीह में मनोभाव और सम्बंध कैसे परिवर्तित होते हैं। जो लोग मसीह को जानते हैं, उन्हें लोगों को प्रेम की दृष्टि से देखना चाहिए और अपने सम्बन्धों में उस प्रेम को व्यक्त करना चाहिए।

पौलुस का फिलेमोन से की गई विनती हमें स्मरण कराता है कि मसीही विश्वासियों के रूप में हमें सदैव एक-दूसरे को क्षमा करने के लिये तैयार रहना चाहिए। चाहे दूसरों ने हमारे साथ कितना भी गलत व्यवहार किया हो, हमें शीघ्रता से उन्हें हार्दिक स्वागत करना चाहिए और अपनी स्वीकृति तथा प्रेम दिखाना चाहिए।

मसीह की कलीसिया में पारम्परिक सामाजिक भेदभाव, जैसे दास और स्वामी के बीच का सम्बंध, समाप्त हो जाना चाहिए। हमें सभी मसीही विश्वासियों के प्रति सच्चा प्रेम दिखाना चाहिए, चाहे उनकी आर्थिक या सांस्कृतिक स्थिति, शिक्षा, जातीयता या लिंग कुछ भी हो (देखें गला 3:28; कुल 3:11)। फिलेमोन और उनेसिमुस के बीच मेल-मिलाप कराने की पौलुस की इच्छा इसी प्रकार के प्रेम का एक उदाहरण है।

बहुत से लोगों ने आश्चर्य किया है कि पौलुस ने उनेसिमुस की स्वतंत्रता के लिये या दासत्व को एक व्यवस्था के रूप में समाप्त करने के लिये स्पष्ट रूप से क्यों नहीं कहा। रोमी समाज में दासत्व व्यापक रूप से फैला हुआ था; यह समाज का एक अभिन्न हिस्सा था, और सम्पूर्ण समाज इसी पर आधारित था। पौलुस, अधिकांश आरम्भिक मसीही विश्वासियों की तरह, समाज की पारम्परिक व्यवस्थाओं को स्वीकार करते हुआ प्रतीत होता है, जिनमें दासत्व भी सम्मिलित था। आरम्भिक मसीही विश्वासियों का सेवा का लक्ष्य समाज की व्यवस्थाओं को उखाड़ फेंकना नहीं था, बल्कि लोगों को मसीह में परिवर्तित करना और उन्हें उसमें बनाना था। उद्धार के सुसमाचार का प्रचार करने से कलीसिया की संगति के अन्दर मसीह द्वारा जीवन और सम्बन्धों में बदलाव आएगा।

यद्यपि पौलुस ने स्पष्ट रूप से उनेसिमुस की रिहाई के लिये नहीं कहा, फिर भी उन्होंने स्पष्ट संकेत दिया कि वह उसे सुसमाचार के काम के लिये स्वतंत्र होते देखना चाहेंगे। मसीहियों के बीच क्षमा और पारस्परिक प्रेम में जीवन व्यतीत करने के महत्व पर अपने निरन्तर जोर के द्वारा, वह उन बीजों को बो रहे थे जो एक दिन दासत्व को एक व्यवस्था के रूप में समाप्त करने का परिणाम लाएँगे।